NALANDA OPEN UNIVERSITY

Course : **M.A Psychology, Part-II**

Paper : **Paper-XII**

Prepared by : **Dr. (Prof.) Prabha Shukla**
Retd. Professor of Psychology, Patna University and
Chief Co-ordinator, School of Social Sciences,
Nalanda Open University

Topic : **पिछड़े बालकों की विशेषताएँ, पिछड़े बालकों की शिक्षा समस्या बालकों की पहचान एवं समस्या बालकों की शिक्षा**
(Characteristics of backward child, education of backward child, identification of problem child, Education of problem child)

पिछड़े बालकों की विशेषताएँ, पिछड़े बालकों की शिक्षा समस्या बालकों की पहचान एवं समस्या बालकों की शिक्षा
(Characteristics of backward child, education of backward child, identification of problem child, Education of problem child)

5.1 परिचय (Introduction)

पिछड़ापन एक ऐसा पद है या ऐसी विशिष्ट शैक्षिक अयोग्यता है जिसमें बालक शैक्षिक रूप से अपने समान उम्र के बालकों से पिछड़ा होता है। पिछड़े बालक भी असाधारण बालकों की श्रेणी में आते हैं। जहाँ प्रतिभाशाली एवं मंद बुद्धि बालक अपनी बुद्धि उपलब्धि के आधार पर असाधारण माने जाते हैं, विकलांग अंधे, बहरे, गूँगे बालक अपनी शारीरिक त्रुटियों के कारण असाधारण होते हैं, पिछड़े बालक अपनी शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर असाधारण समझे जाते हैं। पिछड़े बालक साधारणतया किसी शैक्षिक योग्यता जैसे– सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना, तर्क करना इत्यादि योग्यताओं को अर्जित करने और उसका उपयोग करने में विशेष रूप से कठिनाई का अनुभव करते हैं। इसलिए पिछड़ेपन को 'शैक्षिक मंदता' भी कहते हैं।

5.2 पिछड़े बालकों की विशेषताएँ (Characteristics of backward Children)

पिछड़े बालक एवं पिछड़ेपन की परिभाषा अलग-अलग मनोवैज्ञानिकों द्वारा अलग-अलग ढंग से दी गयी है—

बर्टन हॉल (Burton Hall, 1947) के अनुसार, "पिछड़ापन एक ऐसा पद है, जिसका प्रयोग उन स्थितियों के लिए किया जाता है जिसमें बालकों की शैक्षिक उपलब्धि इनकी प्राकृतिक योग्यताओं से निचले स्तर पर होती है।"

स्कोनेल (Sconell) ने पिछड़े बालकों को परिभाषित करते हुए कहा है कि "पिछड़ा छात्र हम उसे कहते हैं जो अपने समान उम्र के छात्रों की तुलना में स्पष्ट रूप से शैक्षिक कमी या दुर्बलता का परिचय देता है।" इसकी सबसे अच्छी परिभाषा बर्ट (Burt, 1950) ने दी है। उनके अनुसार "पिछड़ा बालक वह है जो अपने स्कूल जीवन के बीच (लगभग साढ़े दस साल) अपनी आयु के समकक्ष से नीचे की कक्षा का कार्य करने में असमर्थ हो"।

अगर इन परिभाषाओं की विवेचना करें तो पिछड़े बालकों की कई विशेषताओं का परिचय मिलता है—

(i) निम्न शैक्षिक उपलब्धि (Low intelligence quotient)—बर्ट ने मूलत: पिछड़े बालकों को शैक्षिक उपलब्धि के रूप में परिभाषित किया है। पिछड़े बालकों की शैक्षिक उपलब्धि सीमित होती है। शैक्षिक उपलब्धि (Educational Quotient) एक ऐसा सूचकांक (index) है जिसके प्रयोग के द्वारा छात्रों को

"Backwardness, in general is applied to cases where their educational attainment falls below the level of their natural abilities. (Burdon Hall, 1947, P. 102)

विभिन्न विषयों में अर्जित सामान्य ज्ञान तथा विशेष विषय में अर्जित सामान्य ज्ञान के बारे में आकलन किया जा सकता है। अर्थात् छात्र के शैक्षिक आयु (educational age) और वास्तविक आयु (chronological age) के अनुपात में 100 से गुणा करने पर मिलने वाला अंक शैक्षिक उपलब्धि है। इसे एक विशेष सूत्र से जाना जा सकता है—

$$E.Q. = \frac{EA}{CA} \times 100$$

E.Q = Educational Quotient (शैक्षिक उपलब्धि)

E.A. = Educational Age (शैक्षिक आयु)

C.A. = Chronological Age (वास्तविक आयु)

अगर किसी बालक की वास्तविक आयु ग्यारह (11) वर्ष है और औसत शिक्षा आयु 9 है तो उस बालक की शैक्षिक उपलब्धि $\frac{9}{11} \times 100 = 82$ होगी जो सामान्य बुद्धि उपलब्धि से कम है, इसलिए इसे पिछड़ा बालक कहेंगे।

(ii) **निम्न बुद्धि उपलब्धि**—सामान्य बालकों की तुलना में पिछड़े बालकों की बौद्धिक योग्यता भी शामिल होती है। उनमें लिखने, पढ़ने एवं सीखने में प्रेरणा का अभाव होता है। रेबर (Reber, 1995) के अनुसार पिछड़े बालकों में मानसिक रूप से साधारण न्यूनता (mild retardation) पायी जाती है।

(iii) **अल्प समायोजन** (Poor adjustment)—पिछड़े बालकों में अभियोजन सम्बन्धी अनियमितताएँ पायी जाती हैं। ऐसे बालक पारिवारिक समायोजन, स्वास्थ्य समायोजन तथा सामाजिक समायोजन में पिछड़े होते हैं। उनमें स्कूल एवं शिक्षकों के प्रति नकारात्मक (negative) भाव होता है क्योंकि स्कूल में शैक्षिक कमी के कारण उन्हें हास्य का पात्र बना दिया जाता है। उनमें हीन भावना और कुंठा के कारण चिंता एवं तनाव का समावेश हो जाता है।

(iv) **संवेगात्मक अपरिपक्वता** (Emotional immaturity)—पिछड़े बालक संवेगात्मक रूप से भी अपरिपक्व होते हैं। उन्हें अपने संवेगों पर पूर्ण नियंत्रण नहीं रहता है ना हीं वे अपने संवेगों को अच्छी तरह व्यक्त कर पाते हैं। संवेगात्मक नियंत्रण नहीं रहने से दूसरों के साथ एवं कक्षा में उनका समायोजन ठीक नहीं का पाता और वे वर्ग की पढ़ाई में पिछड़ जाते हैं।

(v) **सीमित आवश्यकताएँ** (Limited needs)—शारीरिक आवश्यकताओं के अतिरिक्त अन्य तरह की आवश्यकताएँ पिछड़े बालकों में न के बराबर होती है। कक्षा में विशेष स्थान मिले, किसी तरह का सामान मिले, प्रतिस्पर्धा के माध्यम से कुछ जीत सकें या फिर प्रतिष्ठा सूचक कोई व्यवहार करें इसके लिए पिछड़े बालक कोई प्रयास नहीं करते।

"Backward pupil is one who compared with other pupils of the same chronological age shows marked educational deficiency" (Schonell, 1948, P. 54)."

"Backward child is one", who is mid-school career is unable to do the work of the class event below that which is normal for his age. (Burt, 1950).

(vi) **सीमित अभिरूचियाँ** (Limited interests)—ऐसे पिछड़े बालकों की अभिरूचि बहुत हीं थोड़ी चीजों या विषयों तक सीमित रहती है। उनकी रूचि कक्षा की पढ़ाई, शिक्षक की ओर या अन्य बालकों में भी नहीं रहती है। उनका आपसी सम्बन्ध संतोषजनक नहीं होता है तथा दूसरे बालकों के साथ सम्बन्ध स्थापित करने में उन्हें संकोच होता है।

पिछड़े बालकों की यही विशेषताएँ (Characteristics) उनकी पहचान (identification) भी हैं। इन्हीं विशेषताओं के कारण उन्हें पिछड़ा बालक कहते हैं। इनकी सबसे बड़ी समस्या इनकी शिक्षा एवं समायोजन से जुड़ी है। अत: इस क्षेत्र में उन्हें काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

संक्षेप में, पिछड़े बालक धीमी गति से सीखते हैं, अत: स्कूल के सामान्य बच्चों के साथ सीखने में उन्हें कठिनाई होती है। उन्हें अपनी कक्षा के पाठ्यक्रम को सीखने में तो कठिनाई होती हीं है साथ में अपनी आयु से निचली कक्षा में भी सीखने में कठिनाई होती है। बुद्धि उपलब्धि सिर्फ पिछड़ेपन का कारण नहीं होती बल्कि बालकों की प्राकृतिक योग्यता की कमी के कारण भी वे पिछड़े बालकों की श्रेणी में आ जाते हैं। कभी-कभी अतिविशिष्ट बालक भी कई वातावरण जनित और मनोवैज्ञानिक कारणों से पिछड़े बालकों की श्रेणी में आ जाते हैं। अत: जो बालक अपनी प्रारंभिक योग्यता या क्षमता के दर (rate) के अनुसार उन्नति नहीं करते, उन्हें पिछड़ा बालक कहते हैं। दूसरे शब्दों में, अपनी योग्यता के अनुकूल शिक्षण गति की कमी को पिछड़ापन कहते हैं।

5.3 पिछड़ेपन के कारण (Causes of Backwardness)

प्रत्येक व्यक्ति की समस्याएँ अलग-अलग होती हैं। अत: पिछड़ेपन के सामान्य कारणों को बताना मुश्किल है। लेकिन, पिछड़ेपन की जड़ों में कुछ ऐसा निश्चित है, जिसके कारण पिछड़ापन बालकों की श्रेणी में आ जाता है या फिर वातावरण जनित कारणों से वे पिछड़ेपन का शिकार हो जाते हैं।

(a) **बालकों के आत्मनिहित कारक** (Factors lying within the child)—बच्चों की शारीरिक अवस्था प्रत्येक स्थिति में उनकी शैक्षिक प्राप्ति को प्रभावित करती है। बर्ट एवं अन्य मनौवैज्ञानिकों ने अपने अध्ययन में पाया कि ज्यादातर शैक्षिक रूप से पिछड़े बालक किसी न किसी शारीरिक दुर्बलता या क्षति से ग्रसित होते हैं। इनमें कई कारकों का प्रभाव पड़ता है—

(i) **शारीरिक कारक** (Physiological factor)—जो बालक जन्म से ही कमजोर होते हैं, उनमें जीवन शक्ति की कमी होती है या किसी तरह की शारीरिक अपंगता होती है तो वे दुर्बल या दूषित वातावरण के शिकार हो जाते हैं। शारीरिक दोष, संक्रामक बीमारियाँ और अन्य शारीरिक दोषों के कारण या स्वस्थ वातावरण में नहीं रहने से उनकी शैक्षिक क्षमता जल्द ही प्रभावित हो जाती है। उनके शारीरिक दोष जैसे—कमजोर आँखें, सुनने की कमी, भाषा सम्बन्धी दोष इत्यादि उन्हें अयोग्य बना देते हैं और उनमें पिछड़ापन आ जाता है। शारीरिक दुर्बलता या कमी के कारण उनके पास अध्ययन के लिए पर्याप्त समय नहीं होता और वे अपनी पढ़ाई से पिछड़ जाते हैं।

(ii) **बौद्धिक कारक** (Intellectual factor)—इस प्रकार के पिछड़े बालकों में बौद्धिक क्षमता या तो कम होती है या बिल्कुल नहीं होती। कुछ बच्चे अपने मस्तिष्क में कुछ दोष होकर हीं जन्म लेते हैं।

ऐसे मानसिक रूप से अयोग्य बच्चे या शैक्षिक रूप से कमजोर बच्चे स्कूल के सामान्य गतिविधियों से तालमेल नहीं बना सकते। बर्ट ने भी ऐसे बालकों के विषय में कहा है कि ज्यादातर पिछड़ेपन के कारणों में शैक्षिक योग्यता दोषपूर्ण होती है या बुद्धि उपलब्धि निम्न होती है। जिन बच्चों की बौद्धिक क्षमता जैसे—चिंतन करना, तर्क करना, निरीक्षण करना और कल्पना शक्ति का विकास उचित रूप से नहीं होता वैसे बालक जल्द हीं शैक्षिक अव-सामान्यता (sub-normality) की ओर मुड़ जाते हैं।

(b) **वातावरण जनित कारक** (Environmental factors)—निम्नलिखित वातावरण जनित कारक बालकों की शैक्षिक क्षमता को प्रभावित करते हैं—

(i) **घर का प्रभाव** (Home influence)—घरेलू वातावरण का सीधा प्रभाव शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। एक अच्छा प्रभावशाली (harmonious) और समृद्ध घर बच्चों के अच्छे रहन-सहन, पालन-पोषण एवं शिक्षा के लिए उचित सुविधा प्रदान करता है। पर एक गरीब परिवार में सिर्फ शैक्षिक सुविधा ही नहीं बल्कि अतिआवश्यक जरूरतों की पूर्ति भी नहीं होती है। माता-पिता के निम्न आर्थिक स्तर के कारण बच्चे स्कूल की शिक्षा सम्बन्धी जरूरी चीजें भी नहीं खरीद पाते और शैक्षिक रूप से पिछड़ जाते हैं। उदाहरण के लिए, ज्यामिति के लिए 'Instrument box' अति आवश्यक है। अगर किसी बालक के पास नहीं है तो वह ज्यामिति से सम्बन्धित प्रश्नों का हल कर हीं नहीं सकता और पिछड़ जाता है।

इसके अलावा माता-पिता का उदासीन व्यवहार भी बच्चों में पढ़ने की रूचि को कम कर देता है। ऐसे माता-पिता न बच्चों की शैक्षिक जरूरतों को पूरी करते हैं और न सुविधा हीं जुटा पाते हैं।

(ii) **स्कूल का प्रभाव** (School influence)—जिन स्कूलों में शिक्षक बच्चों के साथ दुर्व्यवहार करते हैं, हमेशा डांटते फटकारते रहते हैं, वहाँ शिक्षकों के कठोर व्यवहार के कारण एवं दण्ड के भय से बच्चे पढ़ने से कतराने लगते हैं और धीरे-धीरे पढ़ाई से पिछड़ने लगते हैं। स्कूल का वातावरण अनुकूल नहीं होने के कारण या बुरी संगति के कारण बालक स्कूल से अनुपस्थित रहने लगते हैं। शिक्षा में तो वे पिछड़ हीं जाते हैं, साथ हीं कभी-कभी समस्या बालक भी बन जाते हैं। स्कूल में कई कारक पिछड़ेपन का कारण बनते हैं—

(a) दोषपूर्ण, अरोचक और प्रभावहीन शिक्षण

(b) उपकरणों की कमी, प्रयोग की असुविधा और सृजनात्मक कार्यों का अकार्यान्वयन।

(c) दूषित और प्रभावहीन पाठ्य सामग्री।

(d) मार्गदर्शिता की कमी, कमजोर प्रशासन और अनुशासनहीनता।

(e) शिक्षकों की गलत मनोवृत्ति, आपसी सम्बन्धों की कमी आदि बालकों में शिक्षा के प्रति निराशाजनक भाव उत्पन्न करते हैं और उनका ध्यान पढ़ाई के तरफ से हट जाता है। फलस्वरूप वे अपनी योग्यता एवं वर्ग की शिक्षा से पिछड़ जाते हैं।

(iii) **पड़ोस एवं अन्य सामाजिक प्रतिनिधियों का प्रभाव** (Neibourhood and other social agencies)—बालकों के पिछड़ेपन में पड़ोस एवं सामाजिक परिवेश का भी बहुत बड़ा हाथ होता है। बच्चे जहाँ जाते हैं, उनका पड़ोस, उनके साथी, जिसके साथ वह खेलता है, समूह—जिसके साथ

वह अपने आपको जोड़ता है, समाज के अन्य सदस्य, सिनेमा, क्लब, धार्मिक और सामाजिक स्थल, जो भी उसके सम्पर्क में आते हैं, सभी उसकी शैक्षिक योग्यता में योगदान करते हैं। दूसरे शब्दों में, बालक जिस वातावरण में रहते हैं उसकी अच्छाई, बुराई, उनका स्वरूप, अन्य सदस्यों की अभिरूचि, मनोवृत्ति, पढ़ने और कार्य करने की आदतें बालकों के शैक्षिक उन्नति का अवनति को प्रभावित करती हैं।

5.4 पिछड़े बालकों की शिक्षा (Education of backword children)

पिछड़े बालक साधारणतया मानसिक संवेगात्मक और सामाजिक समस्याओं से ग्रसित होते हैं। कमजोर बुद्धि एवं वंशानुगत शारीरिक विशेषताओं के अलावा बहुत हद तक वे कुसमायोजन और दुव्यवहार के भी शिकार होते हैं। दूसरे बालकों की तरह उनमें भी सुरक्षा, स्नेह, प्यार, सहानुभूति एवं अपनी इच्छाओं की पूर्त्ति की आवश्यकता होती है। अगर इन इच्छाओं की पूर्ति में बाधा आती है तो वे मानसिक और संवेगात्मक रूप से क्षुब्ध हो जाते हैं या परेशान रहने लगते हैं। परिणामस्वरूप अपनी शिक्षा में पूरा ध्यान नहीं दे पाते हैं और शैक्षिक रूप से पिछड़ जाते हैं। अत: इन पिछड़े बालकों की शिक्षा उपलब्धि एवं समायोजन के लिए विशेष शिक्षा की आवश्यकता होती है। इनकी शिक्षा के लिए सबसे पहले पिछड़ेपन के कारणों का पता लगाना चाहिए। उसके बाद उपचार के लिए निर्देश देना चाहिए।

(a) **शैक्षिक अयोग्यता एवं पिछड़ेपन के उपचार** (Diagnosis of educational backwardness)—पिछड़े बालकों की शिक्षा का कार्यक्रम तैयार करने के पहले उनके पिछड़ेपन के लक्षणों का पता लगाना अति आवश्यक है। इसके लिए कई सुझाव दिये गये हैं—

(i) किसी विशिष्ट विषय में पिछड़ेपन के स्वरूप को जानने के लिए योग्यता मापनी परीक्षण (attainment test) और रोग लक्षण सम्बन्धी परीक्षण (diagnostic test) का उपयोग करना चाहिए।

(ii) किसी भी मानकीकृत (standardized) परीक्षण से उनके बौद्धिक स्तर की माप करनी चाहिए।

(iii) अन्य मनोवैज्ञानिक परीक्षणों की सहायता से बालकों की विशिष्ट योग्यता की जाँच करनी चाहिए।

(iv) किसी भी अवस्था में पिछड़े बालकों का सम्पूर्ण व्यवहार और विशिष्ट व्यवहार का निर्णय बाह्य-निरीक्षण विधि से करना चाहिए।

(v) पिछड़े बालकों की शारीरिक अवस्था की डाक्टरी जाँच होनी चाहिए।

(vi) पिछड़े बालकों के स्कूल का वातावरण शिक्षण विधि एवं अन्य शैक्षिक सुविधा की अच्छी तरह विवेचना होनी चाहिए।

इसके अतिरिक्त पिछड़े बालकों के परिवार का स्तर, रहन-सहन, माता-पिता की शिक्षा परिवार के सदस्यों के बीच आपसी सम्बन्ध और सामाजिक वातावरण का भी अच्छी तरह अध्ययन करना चाहिए। शिक्षकों एवं वर्ग के अन्य बच्चों के साथ आपसी सम्बन्ध एवं अंत:क्रिया (interaction), वर्ग के कार्यों एवं शैक्षिक प्रगति की देखरेख पूरी तरह होनी चाहिए जिससे उनके लिए सही शैक्षिक सुझाव दिये जा सके।

(b) **शैक्षिक निर्देशन एवं उपचार** (Educational Guidance and Treatment) पिछड़ेपन के कारणों एवं लक्षणों का पता लगा लेने के पश्चात् उनके लिए सही शिक्षा एवं उपचार आसान हो जाता है। पिछड़े बालकों की शिक्षा पूर्णतया उनके पिछड़ेपन के स्वरूप और उनकी व्यापकता (extent) पर निर्भर करती है। सभी पिछड़े बालक अपने आप में अपूर्व या अनूठे होते हैं। अत: उनके पिछड़ेपन की गंभीरता को देखते हुए कई शैक्षिक उपाय किये गये हैं—

(a) **उपयुक्त वातावरण प्रदान करना तथा व्यक्तिगत ध्यान देना** (To provide adequate environment and pay personal attention)—पिछड़े बालकों में वातावरण जनित कारकों के कारण स्वभाव सम्बन्धी एवं संवेगात्मक कठिनाइयाँ आती हैं। ऐसे संवेगात्मक रूप से वंचित एवं मानसिक उद्विग्नता से ग्रसित बालकों को प्यार स्नेह एवं सुरक्षा की आवश्यकता होती है। अत: उनके लिए एक ऐसा वातावरण तैयार करना चाहिए, जिसमें माता-पिता बच्चों पर पूरा ध्यान दें, उनकी दैनिक एवं संवेगात्मक जरूरतों को पूरा करें। उनकी शिक्षा के लिए उन्हें प्रेरित करें, उनका उत्साह बढ़ायें जिससे उन्हें अपना पिछड़ापन दूर करने में सहायता मिले। इसी तरह उनके शैक्षणिक वातावरण में सुधार लाकर उनके पिछड़ेपन को दूर किया जा सकता है। उनके घरेलू वातावरण एवं स्कूल का पुनर्गठन करना चाहिए।

पिछड़े बालकों की उचित शिक्षा एवं वर्ग में उचित समायोजन के लिए व्यक्तिगत ध्यान देना आवश्यक है। यदि कोई बालक किसी विषय में पिछड़ जाता है, तो व्यक्तिगत ध्यान देकर उसकी असफलता के कारण का पता लगाया जा सकता है और उसके पश्चात् उस कमी को दूर करने की कोशिश की जा सकती है। उनकी शिक्षा में कोई कमी हो तो शिक्षक और स्कूल को सूचित कर सकें। व्यक्तिगत ध्यान देने से उनके पिछड़ेपन में निश्चित ही सुधार आयेगा।

(ii) **विशेष स्कूल या विशेष कक्षा की सुविधा** (Provision of special school or classes)—पिछड़े बालकों के लिए अलग स्कूल या विशेष कक्षा का होना अति आवश्यक है। ऐसी व्यवस्था में पिछड़े बालक सामान्य बालकों से अलग रखे जाते हैं। मंद बुद्धि होने के कारण अपनी कक्षा के सामान्य पाठ्यक्रम को समझ नहीं पाते हैं। अगर उन्हें सामान्य बालकों के साथ एक कक्षा में रखा जाता है तो वे शैक्षिक स्तर पर और भी पिछड़ जाते हैं। अगर उन्हें अपनें समान बौद्धिक स्तर के बच्चों के साथ रखा जाता है तो वे अपने आपको ज्यादा सुरक्षित महसूस करेंगे। अपने कार्यों के लिए उन्हें उचित सराहना एवं प्रोत्साहन मिलेगा, जो उनके अपने स्तर की होगी। उनमें हीन-भावना नहीं पनपेगी क्योंकि उनकी शिक्षा उनकी मानसिक योग्यताके अनुकूल होगी और उनका पिछड़ापन भी दूर होगा।

(iii) **विशिष्ट पाठ्यक्रम की संरचना एवं विशिष्ट शिक्षकों की व्यवस्था** (Provision of special curriculum and special teachers)—जिन बालकों का पिछड़ापन गहन (acute) होता है, उनके लिए विशेष देखभाल की जरूरत होती है। ऐसे पिछड़े बालकों के लिए विशेष प्रकार के पाठ्यक्रम एवं विशेष शिक्षा पद्धति होनी चाहिए। उसमें व्यवहारिक और ठोस कार्यक्रम होना चाहिए जिससे सामान्य बालकों से कम और सरल पाठ्यक्रम के बावजूद उन्हें सामाजिक और व्यवहारिक ज्ञान मिल सके। इसके अलावा उनकी शिक्षा पद्धति में परिवर्तन कर उनकी बुद्धि के अनुरूप बना देना चाहिए। इसमें प्रशिक्षित शिक्षक की भूमिका बहुत अहम् एवं प्रभावकारी होती है। शिक्षक अपने ज्ञान के द्वारा उचित शिक्षा पद्धति का उपयोग कर शिक्षा को मनोरंजक एवं प्रभावकारी बना सकते हैं। इससे बालकों में शिक्षा के प्रति रूचि जागेगी

और अगर उसके साथ उन्हें सही शैक्षिक उपकरण भी मिलते हैं तो उनका पिछड़ापन दूर हो सकेगा। जब उन्हें पाठ्यक्रम चुनौतीपूर्ण, अभिरूचि के अनुकूल, थोड़े मनोरंजन एवं अन्य कार्यक्रमों के साथ पढ़ने को मिलेगा तो उन्हें पाठ्यक्रम नीरस नहीं लगेगा। पढ़ाई के प्रति जिज्ञासा जागेगी और उचित शिक्षा से पिछड़ापन भी दूर होगा।

(iv) **वर्ग त्यागिता एवं स्कूल से अनुपस्थिति का ध्यान** (Checking truancy and non attendance)—पिछड़े बालक अपने पिछड़ेपन के कारण स्कूल से अनुपस्थित रहने लगते हैं। इस कारण वे पढ़ाई में पिछड़ जाते हैं। लगातार या लंबे समय तक अनुपस्थित रहने के कारण वे विषय के महत्वपूर्ण तथ्यों से परिचित नहीं हो पाते और पिछड़ जाते हैं। माता-पिता को यह ध्यान देना चाहिए कि उनका बच्चा बराबर स्कूल जा रहा है या नहीं ? शिक्षकों को भी ऐसे बालकों की अनुपस्थिति के बारे में माता-पिता को अवगत कराना चाहिए। अगर अनुपस्थिति किसी बीमारी या अन्य कारण से है तो अतिरिक्त पढ़ाई कर उस विषय की कमी को दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए जिससे बालक और न पिछड़ जायें।

(v) **वर्ग उन्नति का प्रमाण रखना** (maintainance of proper progress report)—पिछड़े बालकों की वर्ग उन्नति का प्रमाण-पत्र रखना चाहिए ताकि शिक्षा में सुधार हुआ है या नहीं इसकी जाँच (evaluation) हो सके।

(vi) **शारीरिक दोषों का उपचार** (Treatment of physical defects)—कुछ बालक अपने शारीरिक दोषों के कारण भी शिक्षा में पिछड़ जाते हैं। शारीरिक दोष कई प्रकार के होते हैं—जैसे दृष्टि दोष, भाषा दोष इत्यादि। बर्ट तथा स्कोनेल (Burt & Schonell) के अध्ययन ने स्पष्ट किया है कि 9% बालक शारीरिक दोष के कारण पिछड़ जाते हैं। यदि इन दोषों का उपचार किया जा सकता है तो माता-पिता, अभिभावक या शिक्षकों को पहले इन शारीरिक दोषों को दूर करने का उपाय करना चाहिए। इसके बाद अगर उन्हें समुचित शिक्षा दी जाती है तो उनका पिछड़ापन दूर हो सकता है।

इन सभी उपायों के अतिरिक्त आवश्यकता पड़ने पर उन्हें उचित निर्देश देना चाहिए। परामर्शदात्री संगठनों की सहायता से व्यक्तिगत एवं सामूहिक निर्देश के द्वारा पिछड़े बालकों की अभिरूचि योग्यता और प्रतिभा का पता लगाकर उनकी क्षमता को बढ़ाया जा सकता है। यही नहीं उनके बाहरी वातावरण, साथियों, समूह के नकारात्मक प्रभाव (negative) जो पिछड़ेपन के लिए उत्तरदायी हों, दूर करने का उपाय खोजना होगा।

पिछड़े बालकों की शिक्षा एवं उपचार के लिए शिक्षकों को भी कई सुझाव दिये जा सकते हैं। पर पिछड़े बालकों की समस्या इतनी गंभीर और उलझी हुई होती है कि कोई एक उपाय या सुझाव कारगर नहीं हो सकता। इसलिए सिर्फ शिक्षक ही नहीं, बल्कि माता-पिता, मनोवैज्ञानिक सामाजिक कार्यकर्त्ता एवं प्रदेश के अधिकारियों सभी को एकजुट होकर पिछड़े बालकों की शिक्षा के लिए प्रयत्नशील होना होगा।

5.5 समस्या बालकों के अर्थ एवं विशेषताएँ (Meaning and Characteristics of Problem children)

समस्या बालकों से तात्पर्य उन बालकों से है, जिसका व्यवहार सामान्य नहीं होता और उनमें किसी न किसी प्रकार की समायोजन की समस्या उपस्थित रहती है। साधारणतया कुसमायोजित बालकों को ही "समस्या बालक" कहते हैं। उनकी पहचान कक्षा में ही होती है।

अक्सर ऐसा देखा जाता है कि कक्षा में कुछ बालक ऐसे होते हैं जो बहुत उग्र होते हैं। अकारण साथियों से झगड़ा करना, कक्षा से बाहर रहना, कक्षा एवं स्कूल का अनुशासन तोड़ना, शिक्षकों की अवमान्यना एवं धमकी देना इत्यादि उनकी विशेषता होती है। कोई आलसी (truant) होते हैं, कुछ में हमेशा घबड़ाहट (nervousness) होती है तो कोई अति कायरता का प्रदर्शन करते हैं। वैलेन्टाइन (Valentine) के अनुसार "समस्या बालक पद का प्रयोग ऐसे बालकों के लिए किया जाता है, जिनके व्यवहार या व्यक्तित्व में किसी प्रकार की गंभीर समस्या होती है।"

बोअर एवं कॉफमैन (Bower, 1969 – Kauffman, 1977) की परिभाषा में भी स्कूल सम्बन्धी वातावरण सम्मिलित है। उनके अनुसार नीचे लिखे गये पाँच गुणों में से एक या एक से अधिक गुण किसी बालक में लम्बे समय तक रहते हैं या लम्बे समय से पाये जाते हैं तो उसे समस्या बालक कहते हैं—

(i) यदि बालक में सीखने की अक्षमता हो (inability) जिसकी व्याख्या बौद्धिक आधार पर नहीं की जा सकती हो।

(ii) यदि बालकों में अपने साथियों एवं शिक्षकों के साथ संतोषजनक अन्तरवैयक्तिक सम्बन्ध बनाने एवं कायम करने की अक्षमता हो।

(iii) यदि बालक में सामान्य परिस्थितियों में भी अनुपयुक्त भाव (in-appropriate feeling) उत्पन्न होता हो या अनुपयुक्त व्यवहार किया जाता हो।

(iv) यदि बालक अक्सर दुखी या उदास रहता हो एवं

(v) यदि बालक में व्यक्तिगत या स्कूल की समस्याओं को शारीरिक लक्षणों (डर, दर्द) के माध्यम से समाधान करने की प्रवृत्ति हो, तो 'समस्या बालक' के रूप में उसकी पहचान होती है।

कॉफमैन (Kauffman) ने भी समस्या बालकों की परिभाषा देते हुए कहा है कि "समस्या बालक उन बच्चों को कहा जाता है, जो अपने वातावरण के प्रतिं सामाजिक रूप से अस्वीकार्य ढंग से या/और व्यक्तिगत रूप से असंतोष तरीके से, स्पष्ट ढंग से, लम्बे अरसे से अनुक्रिया करते हैं, परन्तु जिन्हें सामाजिक रूप से स्वीकार्य तथा व्यक्तिगत रूप से संतुष्टि देने वाले व्यवहार को सिखाया जा सकता है।"

इन परिभाषाओं के अध्ययन के पश्चात् समस्यामूलक व्यवहार की दो विशेषताएँ होती हैं—(a) कुसमायोजित होना (to be mal-adjusted) और (b) विशेषज्ञों की नजर में गंभीर रूप से असाधारण होना (to be seriously abnormal)। ऐसे बालकों में व्यक्तिगत एवं सामाजिक समस्याएँ इतनी अधिक होती हैं कि उनका स्कूल में साथियों एवं शिक्षकों के साथ अन्तरवैयक्तिक (interpersonal) सम्बन्ध समाप्त हो जाता है। ये समस्याएँ जन्मजात नहीं बल्कि अर्जित होती है और उन्हें उचित वातावरण एवं शिक्षा प्रदान कर सिखाया भी जा सकता है।

"The term 'problem children' is used to describe children whose behaviour or personality is in some way seriously abnormal." (Valentine)

5.6 समस्या बालकों की पहचान (Identification of problem Children)

समस्या बालकों की पहचान एक कठिन प्रक्रिया है। कभी-कभी हम समस्या बालकों को पहचानने में भूल कर बैठते हैं और वैसे व्यवहार को जो समस्या मूलक नहीं होते, हम समस्यात्मक व्यवहार समझ लेते हैं। इस दिशा में वैलेन्टाईन (Valentine) बर्च (Birch) कमिंग्स (Cummings) एवं हेन्डरसन (Henderson) इत्यादि मनोवैज्ञानिकों ने इस पर अहम् अध्ययन किया है। वैलेन्टाइन के अनुसार दो से पाँच वर्ष तक की आयु के बच्चे प्राय: नटखट एवं उपद्रवी होते हैं। एल० बी० बर्च ने पाया कि 12 साल के 62% लड़के एवं 11 साल की 51% लड़कियाँ दाँतों से नाखून काटते हैं। वैसे तो ये व्यवहार समस्यात्मक दिखते हैं, पर समस्यात्मक होते नहीं।

क्रोनबैक (Cronback) ने अपनी पुस्तक में हेन्डरसन के अध्ययनों का जिक्र किया है। हेन्डरसन ने समस्यात्मक व्यवहारों की एक सूची तैयार की और विशेषज्ञों को इन लक्षणों को गंभीरता के क्रम में 1, 2, 3, 4..... क्रमानुसार नम्बर देने को कहा। विशेषज्ञों ने अप्रसन्नता भय इत्यादि को अति गंभीर लक्षण माना और फुसफुसाहट, अपवित्रता को सबसे कम गंभीर माना। यही सूची (list) अध्यापकों को दिया गया तो उन्होंने अति गंभीर लक्षणों में विषमलिंगीय कामुकता, चोरी, कक्षा से भाग जाना इत्यादि को क्रम से रखा। चूँकि अध्यापकों और छात्रों का आपस में गहरा सम्बन्ध होता है और अध्यापक इन लक्षणों को बहुत सावधानी से परखते हैं, इसलिए उनलोगों ने समस्यात्मक व्यवहार की सूची समस्यात्मक लक्षणों के आधार पर बनायी। विशेषज्ञों और अध्यापकों में इन लक्षणों के स्वरूप पर मतभेद पाया गया। विशेषज्ञों के अनुसार ये लक्षण बालकों में किसी विशेष आयु में दिखायी देते हैं और बाद में बालक क्रमश: उन्हें छोड़ देता है। अत: व्यवहार में उन्हीं लक्षणों को समस्यात्मक समझना चाहिए जिससे बालकों के अभियोजन में बाधा पहुँचती हो।

इस विषय पर जी० डी० कमिंग्स (G. D. Cummings) का अध्ययन भी काफी महत्वपूर्ण है। अपनी खोज के आधार पर उन्होंने स्पष्ट किया कि दो से सात वर्ष की आयु के बच्चों में ऐसे बहुत से लक्षण पाये जाते हैं जो वास्तव में समस्यात्मक व्यवहार नहीं होते। इस आयु में अधिक बेचैनी, कायरता भाषा दोष, क्रूरता, घबड़ाहट, झक्कीपन, निर्दयता, झूठ बोलना इत्यादि लक्षण पाये जाते हैं। पर समय से और आयु वृद्धि के साथ दूर भी हो जाते हैं। शिक्षकों को छात्रों में ये लक्षण हमेशा दृष्टिगोचर होते हैं इसलिए वे इसे अति गंभीर समझते हैं। पर कमिंग्स ने अपने अध्ययन में पाया कि लगभग 18 महीने में ये सारे दोष दूर हो गये। 5 साल से अधिक आयु वाले बालकों में 87% सुधार हुआ। यह सुधार उम्र बीतने के साथ अपने आप हुए।

समस्या व्यवहार की गंभीरता शिक्षकों और विशेषज्ञों की मनोवृत्ति पर निर्भर करता है। एक जिस व्यवहार को गंभीर समझता है, दूसरा नहीं समझता। इतना तय है कि समस्या बालक की पहचान इन्हीं लक्षणों के द्वारा होती है। यदि इन्हीं लक्षणों के कारण बालकों में समायोजन करने की क्षमता बुरी तरह प्रभावित होती है या वे लक्षण लम्बे समय से बालकों में विद्यमान हों तो निश्चित रूप से इन लक्षणों से युक्त बालक को समस्या बालक कहेंगे। अत: समस्या बालकों के लक्षणों की पहचान सही होनी चाहिए। फिर उनमें से समस्या बालकों को पहचान कर उनकी समस्या के कारण ढूँढ़ने चाहिए। इसके बाद हीं उपचार की विधि तय करनी चाहिए। इसके लिए समस्या व्यवहार के कारणों की जानकारी अति आवश्यक है। इसी के आधार पर उनकी शिक्षा संभव है।

5.7 समस्या व्यवहार के कारण (Causes of problem behaviour)

समस्या व्यवहार के मुख्यत: दो कारण हैं— अनुवांशिक एवं वातावरण या पर्यावरण जनित ।

(a) **अनुवांशिकता** (Heredity)—इसके कारण समस्या व्यवहार देखे जा सकते हैं, पर अनुवांशिकता समस्या व्यवहार में कम हीं पायी जाती है । इसके कारण स्नावयिक या शारीरिक दोष या संवेदना सम्बन्धी दोष आ सकते हैं पर समस्या व्यवहार बहुत हीं कम लोगों में वंशानुगत होते हैं । यह मुख्यतया अर्जित होती और वातावरण में उपस्थित कारणों से होती है ।

(b) **वातावरण जनित** (Environmental)—वातावरण जनित कारकों या दूषित वातावरण से कई तरह के समस्यात्मक व्यवहार देखने को मिलते हैं—

(i) **घर का वातावरण** (Home environment)—समस्यात्मक व्यवहार का सबसे बड़ा कारण घर का दूषित वातावरण है । थॉमस (Thomas, 1984) तथा क्रो (Crow, 1985) ने अपने अध्ययनों में पाया कि जिस घर का वातावरण कलहपूर्ण होता है, भाई-बहनों एवं परिवार के सदस्यों में द्वेष पाया जाता है या भग्न (broken) परिवार होने से उस परिवार के बच्चों में समस्यात्मक व्यवहार पाया जाता है । बैनिस्टर और रूडर्स (Bannister & Rooders, 1949) के अध्ययनों में पाया गया कि समस्यात्मक व्यवहार के जड़ों में प्राय: निर्धनता, मनोरंजन की असुविधा, उचित देखरेख का अभाव स्नेह एवं प्यार की कमी या अत्यधिक लाड़-दुलार और सौतेली माँ का क्रूर व्यवहार इत्यादि पाये जाते हैं । अधिक प्यार के कारण माता-पिता बालकों की उचित-अनुचित सभी माँगों को पूरा करते हैं जिससे वे जिद्दी और उदंड हो जाते हैं और आगे चलकर 'समस्या बालक' बन जाते हैं ।

(ii) **घर का दोषपूर्ण अनुशासन** (Defective discipline in home)—घर में अगर अति कठोर अनुशासन हो, बहुत ज्यादा निषेधात्मक आज्ञा हो, तो बालक तंग आकर उन नियमों के विपरीत कार्य करने लगते हैं । इसी तरह जिस घर का अनुशासन बिल्कुल ढीला-ढाला हो या उदार हो तो बालकों के लिए कोई नियम नहीं होते । वे अपनी स्वेच्छा से कोई भी मनमानी कर सकते हैं । धीरे-धीरे वे अधिक साहसी हो जाते हैं और यही व्यवहार समस्यात्मक हो जाता है ।

बर्ट (Burt) ने 200 बाल अपराधियों का अध्ययन किया और उसके आधार पर पाया कि घर के वातावरण एवं अनुशासन एवं समस्यात्मक व्यवहार में गहरा संबंध है । कठोर अनुशासन में पलने वाले बालक प्राय: अन्तर्मुखी हो जाते हैं तथा उनमें आत्म-विश्वास की कमी पायी जाती है । फलस्वरूप उनका समायोजन सभी के साथ ठीक से नहीं हो पाता । ढीले-ढाले या उदार अनुशासन में पलने वाले बालक प्राय: चरित्रहीन हो जाते हैं, क्योंकि उन पर किसी भी प्रकार का अंकुश नहीं होता । माता-पिता समय की कमी के कारण उनकी इच्छा तो पूरी कर देते हैं पर ध्यान नहीं दे पाते हैं । कठोर अनुशासन की अपेक्षा उदार अनुशाासन वाले बालक ज्यादा समस्याओं को प्रदर्शित करते हैं ।

(iii) **बौद्धिक स्तर** (Intellectual level)—जिन बालकों की बौद्धिक योग्यता सामान्य बालकों से बहुत अधिक या बहुत कम होती है वैसे बालकों में समस्या बालक बनने के लक्षण पाये जाते हैं । ऐसे बालक कक्षा में अपने साथियों एवं शिक्षकों के साथ अपने आपको अभियोजित नहीं कर पाते हैं । बौद्धिक योग्यता अधिक हो तो पाठ्यक्रम सरल लगता है । अत: वे शिक्षकों की बातों पर ध्यान नहीं देते हैं । कक्षा के दूसरे

बालकों को हीन समझते हैं। अगर बौद्धिक स्तर कम हो तो कक्षा की पढ़ाई के साथ नहीं चल सकते और अपने आपको हीन समझने लगते हैं। दोनों ही अवस्था में उनकी शैक्षिक अभिरूचि घटती है और वे स्कूल से अनुपस्थित रहने लगते हैं। कक्षा से भागना, झूठ बोलना, विद्रोह करना इत्यादि लक्षणों के शिकार होकर समस्यात्मक व्यवहार करने लगते हैं।

(iv) **स्कूल का वातावरण** (School environment)—समस्यात्मक व्यवहार का मुख्य कारण स्कूल में स्वस्थ वातावरण का अभाव या दूषित वातावरण है। यदि बालकों को स्कूल में अति कठोर अनुशासन में रखा जाता है, अनुशासनहीनता के लिए कठोर दंड दिया जाता है तो बालकों में स्कूल से भागने, शिक्षकों से झूठ बोलने की प्रवृत्ति आदि समस्यात्मक व्यवहार देखे जाते हैं। जहाँ स्कूल के प्रशासन में दोष होता है, शिक्षक बालकों के समक्ष अनुचित और अनैतिक व्यवहार करते हैं, शिक्षा प्रणाली रोचक नहीं होती, वहाँ समस्यात्मक व्यवहार अधिक पाये जाते हैं। अगर शिक्षा विधि बालकों की रूचि के अनुकूल नहीं होती तो बालक धीरे-धीरे वर्ग में पिछड़ जाता है और समस्या बालक बन जाता है।

(v) **शारीरिक दोष** (Physical defects)—बालकों के शारीरिक दोष के कारण भी समस्यात्मक व्यवहार देखे जाते हैं। अगर बालकों में कुछ शारीरिक दोष जैसे—लँगड़ाकर चलना, हकलाना या तुतलाना आदि पाये जाते हैं तो प्राय: दूसरे बालक उनकी हँसी उड़ाते हैं या उपहास करते हैं। शारीरिक दोषों से युक्त बालक ऐसी स्थिति से बचने के लिए प्राय: स्कूल से भाग जाते हैं और माता-पिता से झूठ बोलते हैं। अन्य गलत बालकों की संगत में आकर समाज विरोधी कार्य में जुटकर समस्या बालक बन जाते हैं।

(vi) **सामाजिक आर्थिक स्तर** (Socio-economic status)—अध्ययनों द्वारा यह स्पष्ट किया जा चुका है कि अति उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर और निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर दोनों स्तर के बालकों में समस्यात्मक व्यवहार पाये जाते हैं। उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के बालकों को कोई अभाव नहीं रहता है अत: वे पैसों के बल पर कुछ भी अनैतिक कार्य कर लेते हैं, दिन-प्रतिदिन उच्छृंखल होते जाते हैं और धीरे-धीरे अपराध तक करने में नहीं हिचकते।

दूसरी ओर, निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के बालकों की अधिकतर आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो पाती है। अपने वर्ग के दूसरे बालकों की अमीरी देखकर उनमें कुंठा एवं निराशा उत्पन्न होती है और वे समस्यात्मक व्यवहार करने लगते हैं। कैण्टोविच (Kantowitz, 1989) ने भी अपने अध्ययन में पाया कि दोनों तरह के सामाजिक आर्थिक स्तर समस्यात्मक व्यवहार को बढ़ावा देते हैं।

5.8 समस्या बालकों की शिक्षा एवं अभियोजन या उपचार (Education and adjustment or treatment of problem children)

समस्या बालकों की शिक्षा एवं सुधार के लिए परिवार, स्वयं बालक, स्कूल के सभी दूषित तत्वों को दूर करना आवश्यक है। इनके उपचार के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये गये हैं—

(i) **घरेलू वातावरण में सुधार** (Improvement in home environment)—समस्या बालकों की समस्या की शुरूआत सबसे पहले घर से होती है। अत: घर की उपयुक्तता अति आवश्यक है। हरलॉक (Hurlock, 1979) के अनुसार माता-पिता का आपसी सम्बन्ध उनके द्वारा बच्चों की उचित देखभाल, प्यार एवं स्नेह तथा परिवार के अन्य सदस्यों के बीच स्वाभाविक एवं स्वस्थ अंत:क्रिया के अभाव में बालकों

में समस्यात्मक (problematic behaviour) व्यवहार परिलक्षित होते हैं। अत: घर एक आदर्श होना चाहिए, घरेलू वातावरण अनुकूल होना चाहिए। सही अनुशासन होना चाहिए जिससे बच्चों के नियंत्रण में आसानी हो, तो ऐसे वातावरण में दी गयी शिक्षा लाभदायक होती है।

(ii) **बौद्धिक क्षमता के अनुकूल शिक्षा** (Education according to intellectual capacities)—समस्या बालकों की शिक्षा उनकी बौद्धिक क्षमता के अनुकूल होनी चाहिए। प्रतिभाशाली बालक और निम्न बौद्धिक स्तर के बालक, दोनों की समस्याएँ अलग-अलग होती हैं अत: उनकी बौद्धिक क्षमता के अनुकूल हीं पाठ्यक्रम तैयार करना चाहिए। रिली (Reilly, 1977) के अनुसार जब समस्या बालकों को शिक्षा उनके बौद्धिक स्तर के अनुकूल दी जाती है तो समस्या बालकों में सुधार होने लगता है।

(iii) **अच्छी अध्यापन विधि** (Good Teaching Method)—समस्या बालकों का कुछ समय स्कूल में बीतता है। अत: स्कूल का वातावरण स्वस्थ एवं अनुशासनपूर्ण होना चाहिए। न शिक्षकों की ओर से और न प्रशासन की ओर से जातीयता, पक्षपात, तरफदारी, प्रान्तीयता आदि बुराईयों को बढ़ावा मिलना चाहिए। इससे दूसरे बच्चों एवं समस्या बालकों में भी निराशा और हताशा होती है। सभी बालकों को अपनी इच्छाओं को व्यक्त करने की छूट होनी चाहिए। अत: शिक्षकों की दूषित मानसिकता को रोकना होगा। अगर वे हीं गलत व्यवस्था विश्वास करेंगे तो समस्या बालकों की समस्या और बढ़ेगी।

(v) **अभिरूचि एवं अभिक्षमता के अनुसार शिक्षा** (Education according to interest and aptitude)—समस्या बालकों की अभिरूचियों के अनुसार शिक्षा देनी चाहिए। इसकी चर्चा हो चुकी है। समस्या बालकों को उचित शिक्षा देने के लिए उनकी अभिक्षमता (aptitude) का पता लगाना भी आवश्यक है उनकी रूचि एवं अभिक्षमता को पहचान कर उसके अनुकूल शिक्षा देने से उनकी योग्यता का भरपूर उपयोग होता है और उनके उपचार में भी सहायता मिलती है। वुडवर्थ (Woodworth) एवं मैकडूगल (McDougal) आदि मनोवैज्ञानिकों के अनुसार "मानव अभिरूचियाँ मानव क्षमताओं के साथ चलती है, जहाँ बालक अपनी मेधा का प्रदर्शन करता है वहीं अपनी रूचि का भी प्रदर्शन करता है। (Human interest keep pace with human capacities where a child displays talent he also displays interests) अभिक्षमता एवं रूचि को परख कर शिक्षा देने से समस्यात्मक व्यवहार बहुत हद तक दूर होता है।

(vi) **व्यवहार परिमार्जन** (Behaviour modification)—समस्या बालकों के उपचार के लिए व्यवहार परिमार्जन विधि बहुत उपयोगी साबित हुई है। इस विधि में समस्या बालकों के समस्यात्मक व्यवहार की जगह अच्छे व्यवहारों को पुनर्बलन के आधार पर सिखाया जाता है। इस प्रक्रिया को बार-बार दुहराने से समस्यात्मक व्यवहार धीरे-धीरे कम होते हैं और बालक सामाजिक व्यवहार सीखते हैं। इन विधियों एवं उपायों के प्रयोग से समस्या बालकों के समस्यात्मक व्यवहार का उपचार कर उन्हें समायोजनशील (adaptive) बनाया जा सकता है।

5.9 सारांश (Summary)

पिछड़ापन एक विशिष्ट शैक्षिक अयोग्यता है जिसमें बालक शैक्षिक रूप से अपने समान उम्र के बच्चों से पिछड़ा होता है। उसे शिक्षा सम्बन्धी गुणों को अर्जित करने में कठिनाई होती है। उनकी शैक्षिक उपलब्धि निम्न होती है।

बालकों में पिछड़ेपन के कई कारण पाये जाते हैं जिनमें बौद्धिक क्षमता की कमी, दूषित वातावरण, शारीरिक दोष इत्यादि प्रधान है। पिछड़े बालकों की कुछ समस्याएँ होती हैं जिससे उनका सामाजिक अभियोजन दूसरों के साथ नहीं हो पाता है। इनकी शिक्षा एवं अभियोजन के लिए कई कारगर उपायों का वर्णन किया गया है। जैसे—उपयुक्त वातावरण का निर्माण, विशेष स्कूल या कक्षा, विशिष्ट पाठ्यक्रम आदि का प्रबन्ध करना मुख्य है।

समस्या बालकों से तात्पर्य उन बालकों से है जिनका व्यवहार सामान्य नहीं होता है और वे किसी न किसी प्रकार के समायोजन की समस्या से ग्रसित होते हैं। ऐसे समस्या बालकों का स्वभाव उग्र होता है और वे अकारण हीं साथियों से झगड़ा करने लगते हैं, स्कूल का अनुशासन तोड़ते हैं और शिक्षकों की अवमान्यना करते हैं। अपने साथियों एवं शिक्षकों के साथ अन्तरवैयक्तिक (interpersonal) संबंध बनाने में असक्षम होते हैं।

समस्या व्यवहार में कई कारण होते हैं जैसे—घर का वातावरण, गलत अनुशासन, स्कूल का वातावरण, दोषपूर्ण शिक्षा पद्धति इत्यादि। समस्या बालकों की शिक्षा एवं सुधार के लिए वातावरण में सुधार, बौद्धिक क्षमता के अनुकूल शिक्षा, व्यवहार परिमार्जन आदि विधियों का प्रयोग आवश्यक है। समस्या व्यवहार को दूर करने के लिए माता-पिता एवं शिक्षकों की परस्पर भागीदारी भी आवश्यक है।

5.10 मॉडल प्रश्न (Model Questions)

1. पिछड़ेपन की उचित परिभाषा देते हुए उनकी विशेषताओं का वर्णन करें।
2. पिछड़े बालकों की कौन-कौन-सी समस्याएँ हैं? उन्हें दूर करने के उचित उपायों का उल्लेख कीजिए।
3. समस्या बालक किसे कहते हैं? उनकी पहचान आप कैसे करेंगे? इसकी व्याख्या कीजिए।
4. प्रभावशाली शिक्षा एवं सही उपचार से समस्या बालकों के समस्यात्मक व्यवहार को दूर किया जा सकता है, इस कथन की पुष्टि कीजिए।